ऊपर का या नीचे का

जेनेट स्टीवंस

ऊपर का
या नीचे का

जेनेट स्टीवंस

एक बार की बात है, एक बहुत आलसी भालू था. उसके पास बहुत सारा पैसा और बहुत सारी ज़मीन थी. उसके पिता एक मेहनती और होशियार व्यवसायी भालू थे, और वो अपनी सारी दौलत अपने बेटे के लिए छोड़ गई थी.
लेकिन भालू बस दिन-रात सोना चाहता था.

सड़क के पास ही एक खरगोश रहता था. हालाँकि खरगोश होशियार था, लेकिन कभी-कभी वह मुसीबत में पड़ जाता था. उसके पास भी कभी ज़मीन थी, लेकिन अब उसके पास कुछ भी नहीं था. वह एक कछुए के साथ एक जोखिम भरी शर्त हार गया था और उसने कर्ज चुकाने के लिए अपनी सारी ज़मीन भालू को बेच दी थी.

खरगोश और उसका परिवार बहुत बुरी हालत में था.

"बच्चे बहुत भूखे हैं, पिता खरगोश! हमें कुछ करना चाहिए!" एक दिन मिसेज़ खरगोश ने रोते हुए कहा. फिर खरगोश और मिसेज़ खरगोश ने मिलकर एक योजना बनाई.

अगले दिन खरगोश भालू के घर की ओर तेज़ी से आगे बढ़ा. भालू, बेशक सो रहा था.

“नमस्ते, भालू, उठो! मैं तुम्हारा पड़ोसी हूं, खरगोश, और मेरे दिमाग में एक विचार है!"

भालू ने एक आँख खोली और बड़बड़ाया.

"हम एक सौदे में भागीदार बन सकते हैं!" खरगोश ने कहा. "हमें बस तुम्हारे घर के सामने का खेत चाहिए. मैं रोपण और कटाई का कठिन काम करूँगा, और फिर हम उपज को आपस में बाँट लेंगे. हाँ, भालू, हम सब साथ में करेंगे. मैं काम करूँगा और तुम सोना."

"ठीक?" भालू ने कहा. "तो, यह बताओ मेरा हिस्सा क्या होगा, भालू? ऊपरी का आधा या निचला आधा?"

"यह तुम पर निर्भर है - ऊपर का या नीचे का."

"उह, चलो ठीक है," भालू ने जम्हाई लेते हुए कहा. "मैं ऊपर का आधा हिस्सा लूँगा, खरगोश. ठीक है."

खरगोश मुस्कुराया. "चलो सौदा पक्का है, भालू."
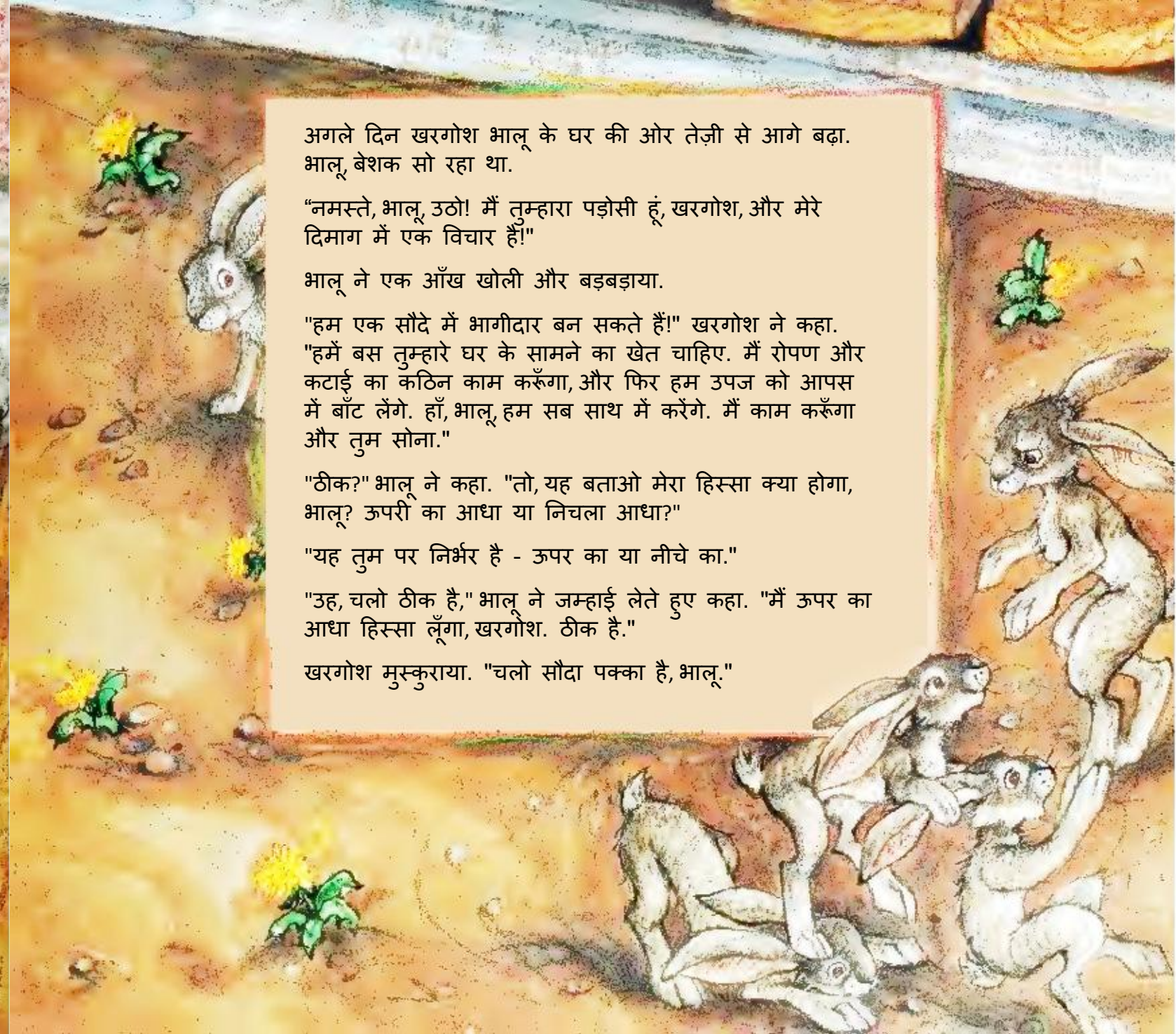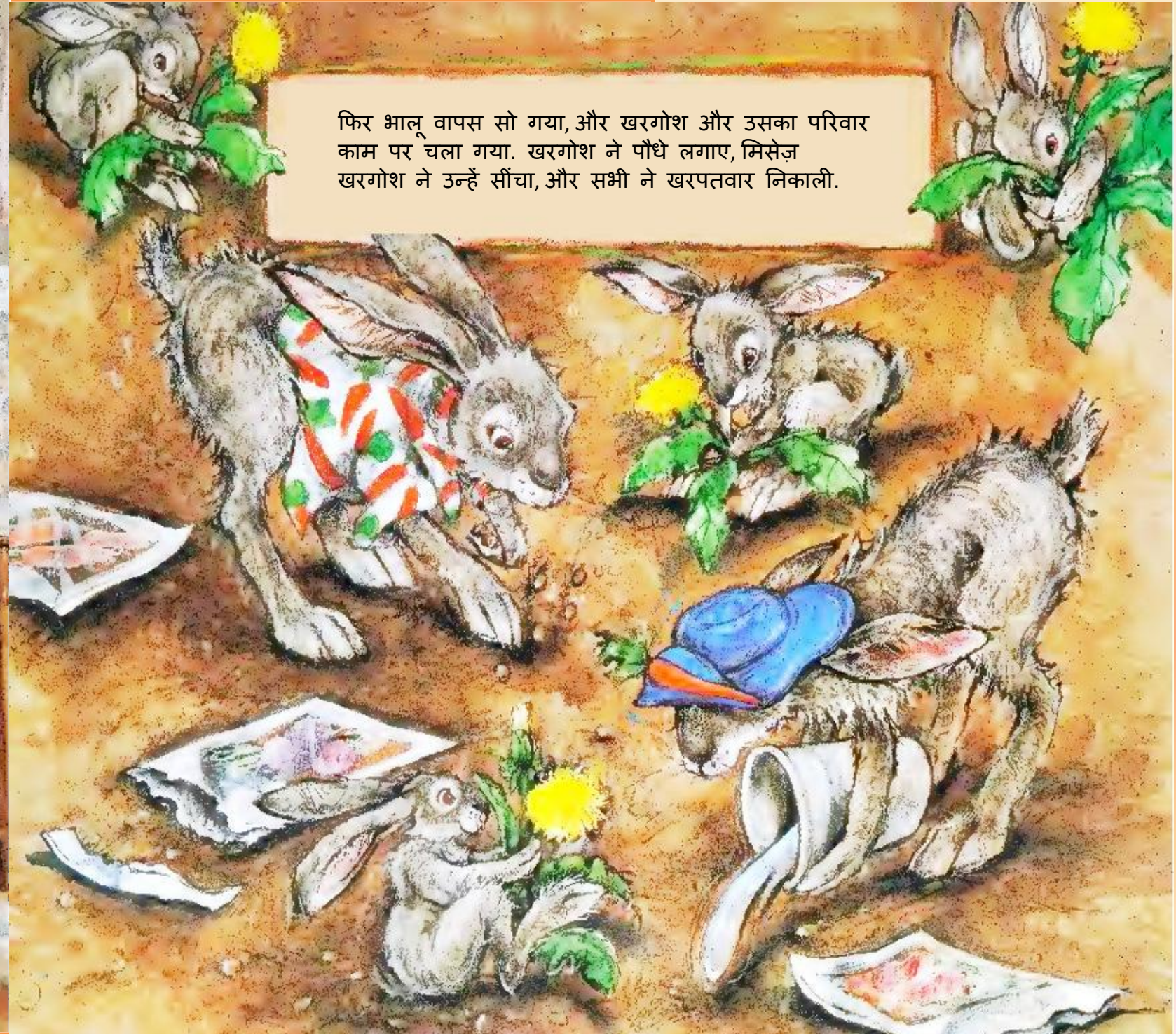
फिर भालू वापस सो गया, और खरगोश और उसका परिवार काम पर चला गया. खरगोश ने पौधे लगाए, मिसेज़ खरगोश ने उन्हें सींचा, और सभी ने खरपतवार निकाली.
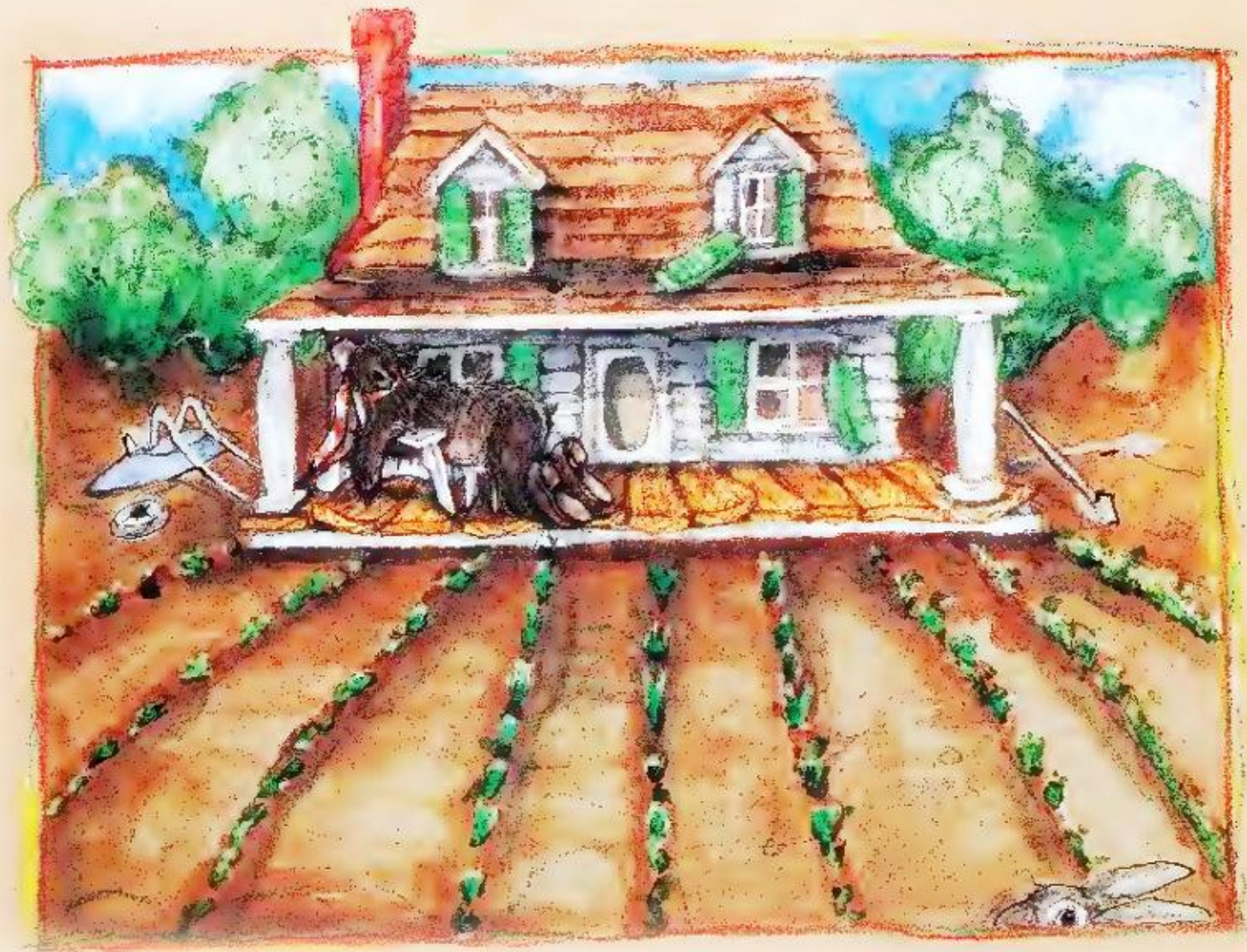
फसल उगने के दौरान भालू सोता रहा.
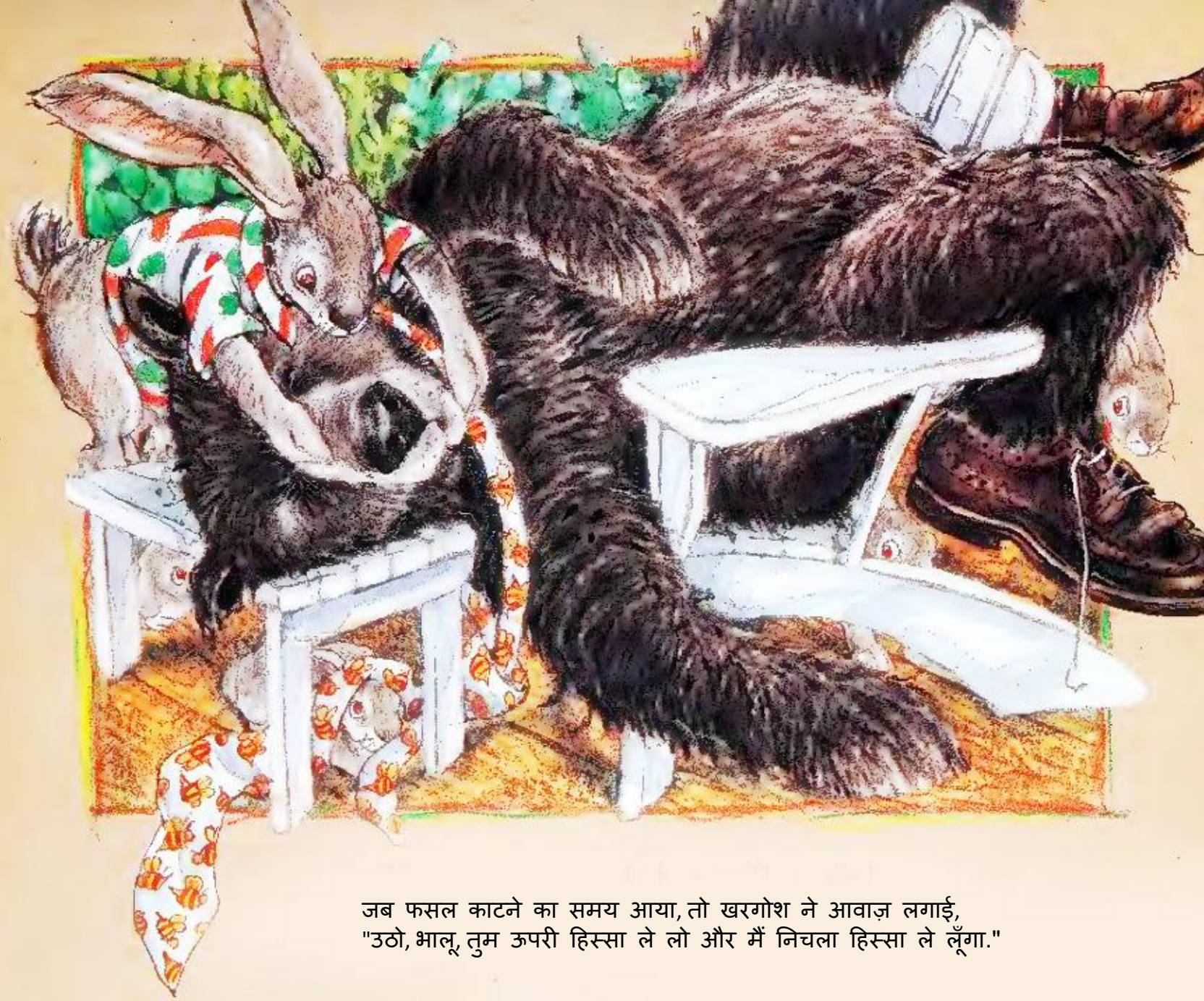
जब फसल काटने का समय आया, तो खरगोश ने आवाज़ लगाई,
"उठो, भालू, तुम ऊपरी हिस्सा ले लो और मैं निचला हिस्सा ले लूँगा."
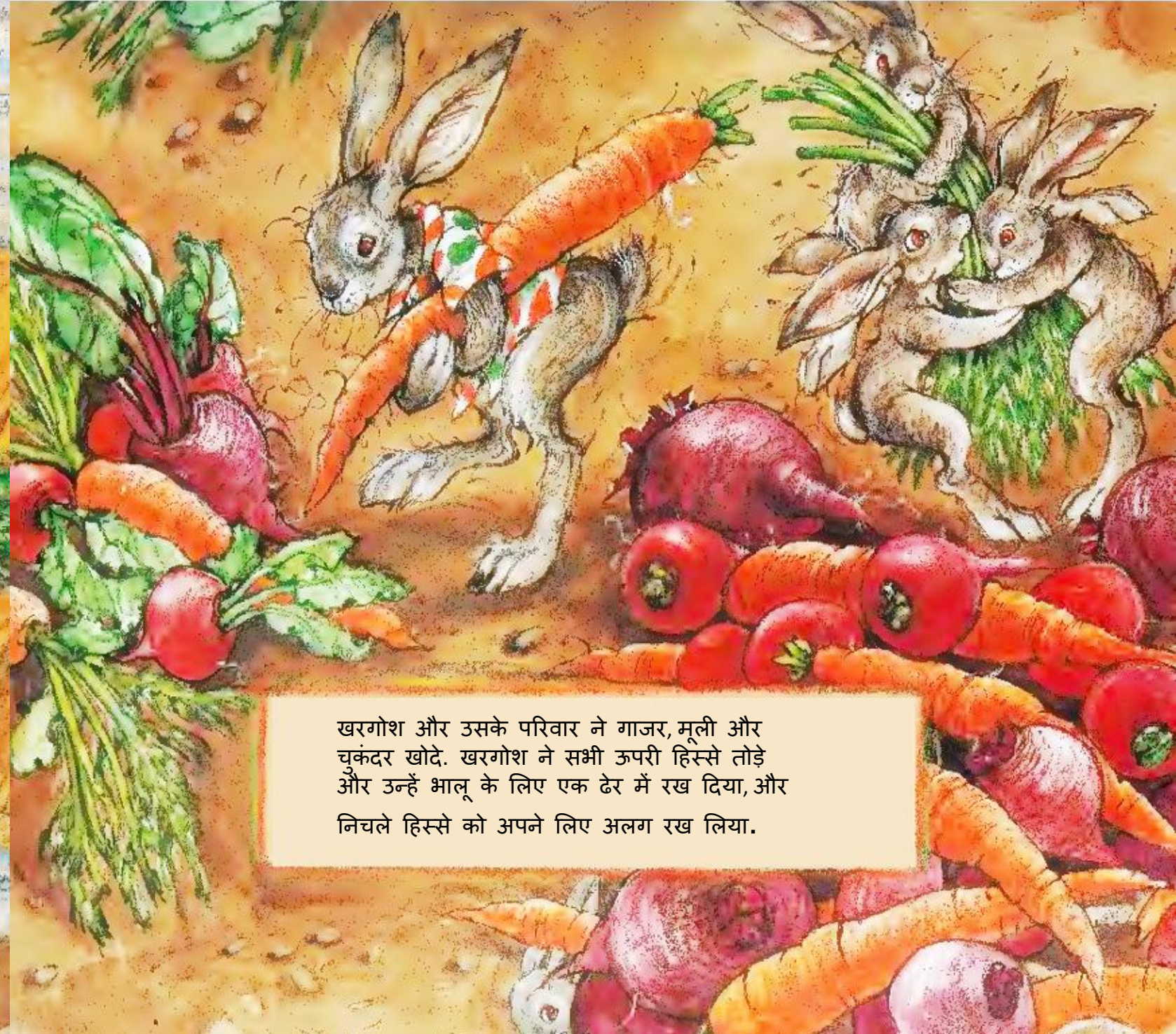
खरगोश और उसके परिवार ने गाजर, मूली और चुकंदर खोदे. खरगोश ने सभी ऊपरी हिस्से तोड़े और उन्हें भालू के लिए एक ढेर में रख दिया, और निचले हिस्से को अपने लिए अलग रख लिया.

भालू ने अपने ढेर को गुस्से से घूरते हुए कहा, "लेकिन, खरगोश, सभी बेहतरीन हिस्से तुम्हें मिले हैं!"

"तुमने खुद ऊपरी हिस्से चुने थे भालू," खरगोश ने कहा.

"देखो, खरगोश, तुमने मुझे धोखा दिया है. तुम इस खेत में फिर से फसल लगाओ - और इस बार मैं फसल का निचला हिस्सा लूंगा."

खरगोश ने सहमति जताई. "ठीक है. सौदा पक्का, भालू."

फिर भालू वापस सो गया, और खरगोश और उसका परिवार काम पर लग गया. उन्होंने पौधे लगाए, पानी दिया और खरपतवार निकाली.

जबकि फसल उग रही थी तो भालू सो रहा था.
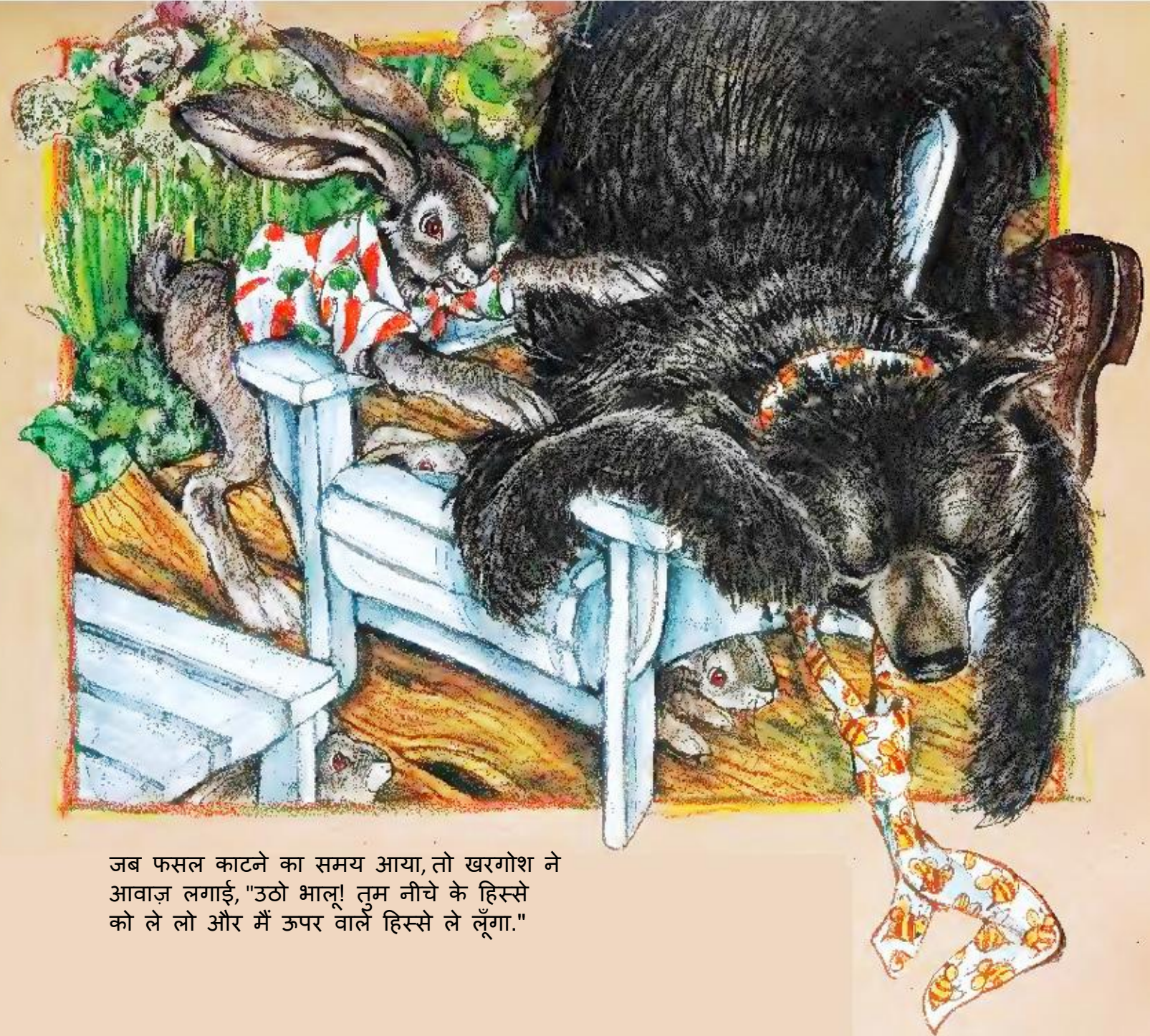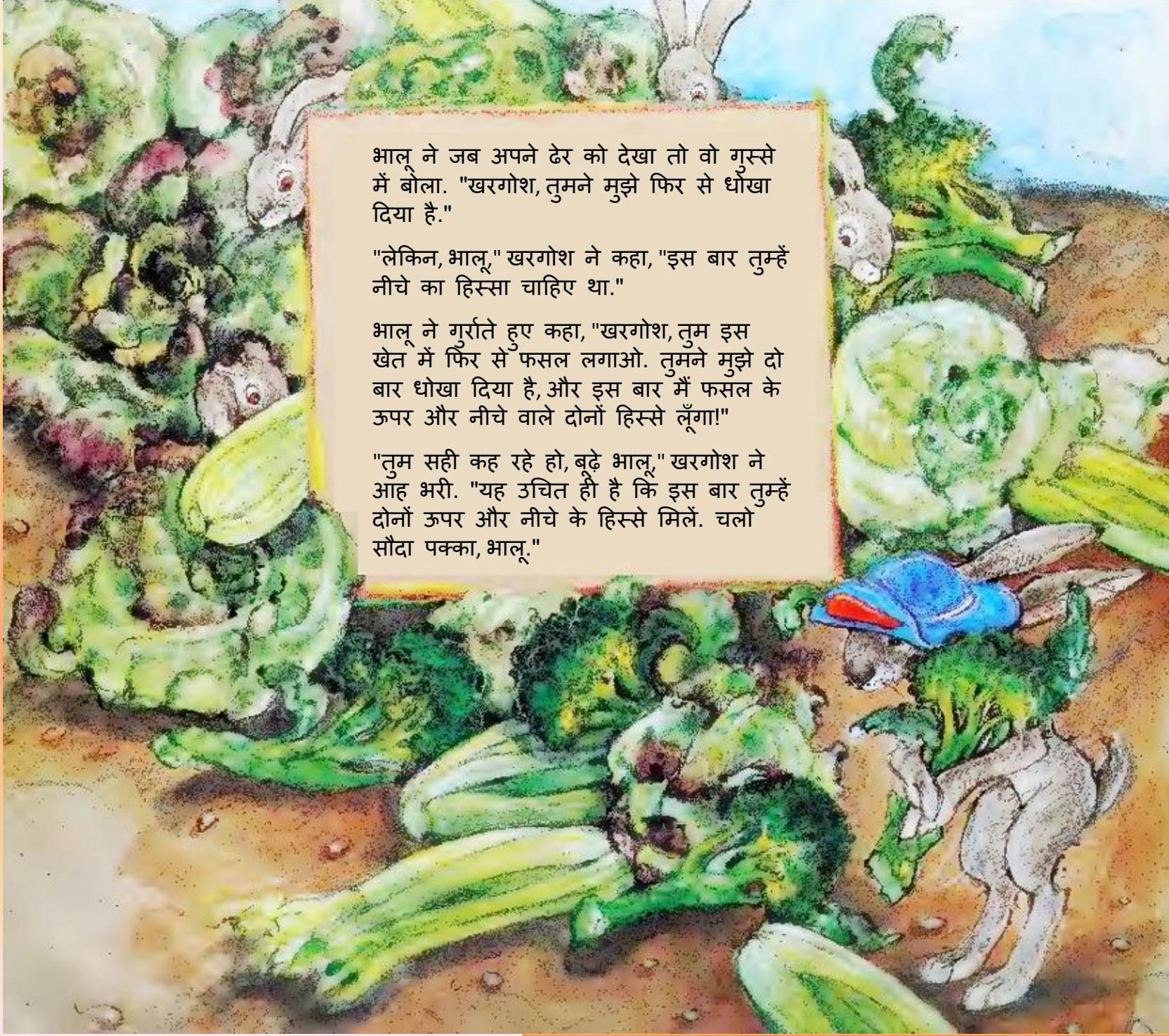
जब फसल काटने का समय आया, तो खरगोश ने आवाज़ लगाई, "उठो भालू! तुम नीचे के हिस्से को ले लो और मैं ऊपर वाले हिस्से ले लूँगा."

खरगोश और उसका परिवार इकट्ठा हुआ. उन्होंने सलाद के पत्ते, ब्रोकली और अजवाइन को इकट्ठा किया. खरगोश ने भालू के लिए नीचे के हिस्से को खोदा और ऊपर के हिस्से को अपने ढेर में रख दिया.

भालू ने जब अपने ढेर को देखा तो वो गुस्से में बोला. "खरगोश, तुमने मुझे फिर से धोखा दिया है."

"लेकिन, भालू," खरगोश ने कहा, "इस बार तुम्हें नीचे का हिस्सा चाहिए था."

भालू ने गुर्राते हुए कहा, "खरगोश, तुम इस खेत में फिर से फसल लगाओ. तुमने मुझे दो बार धोखा दिया है, और इस बार मैं फसल के ऊपर और नीचे वाले दोनों हिस्से लूँगा!"

"तुम सही कह रहे हो, बूढ़े भालू," खरगोश ने आह भरी. "यह उचित ही है कि इस बार तुम्हें दोनों ऊपर और नीचे के हिस्से मिलें. चलो सौदा पक्का, भालू."
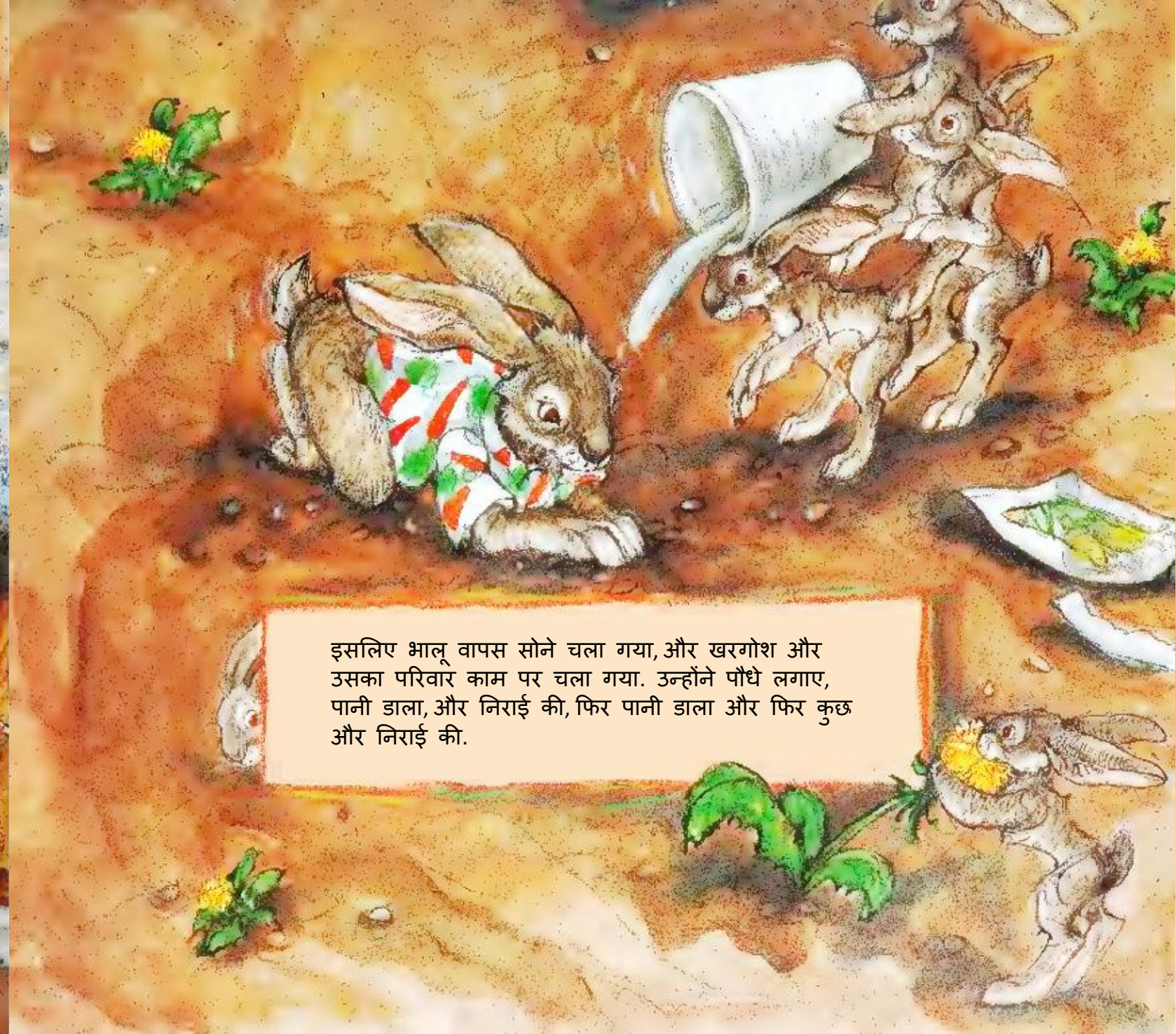
इसलिए भालू वापस सोने चला गया, और खरगोश और उसका परिवार काम पर चला गया. उन्होंने पौधे लगाए, पानी डाला, और निराई की, फिर पानी डाला और फिर कुछ और निराई की.

फसल उगने के समय भालू सो रहा था.
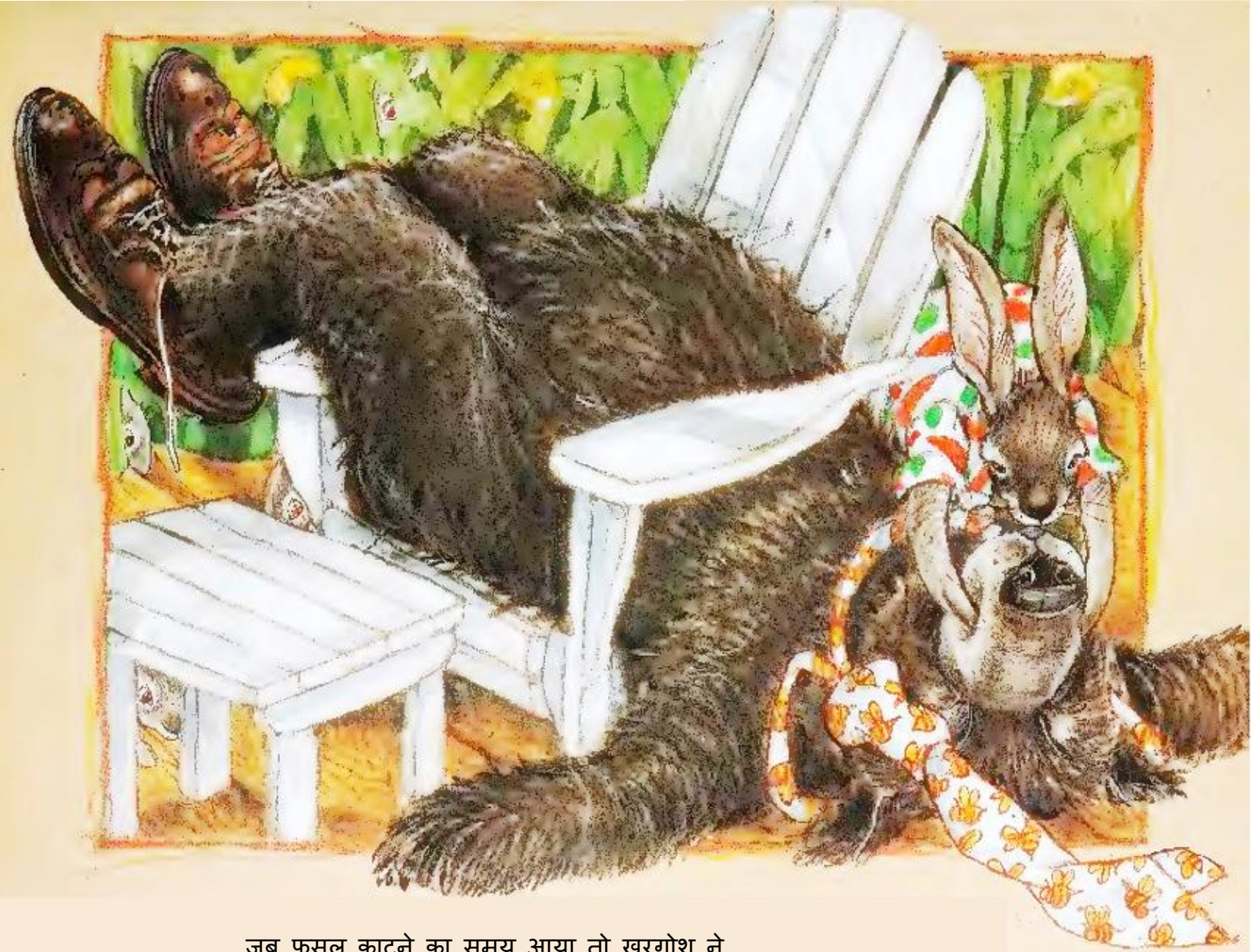
जब फसल काटने का समय आया, तो खरगोश ने पुकारा, "उठो, भालू! अब समय आ गया है कि तुम अपने ऊपरी और निचले हिस्से काट लो."
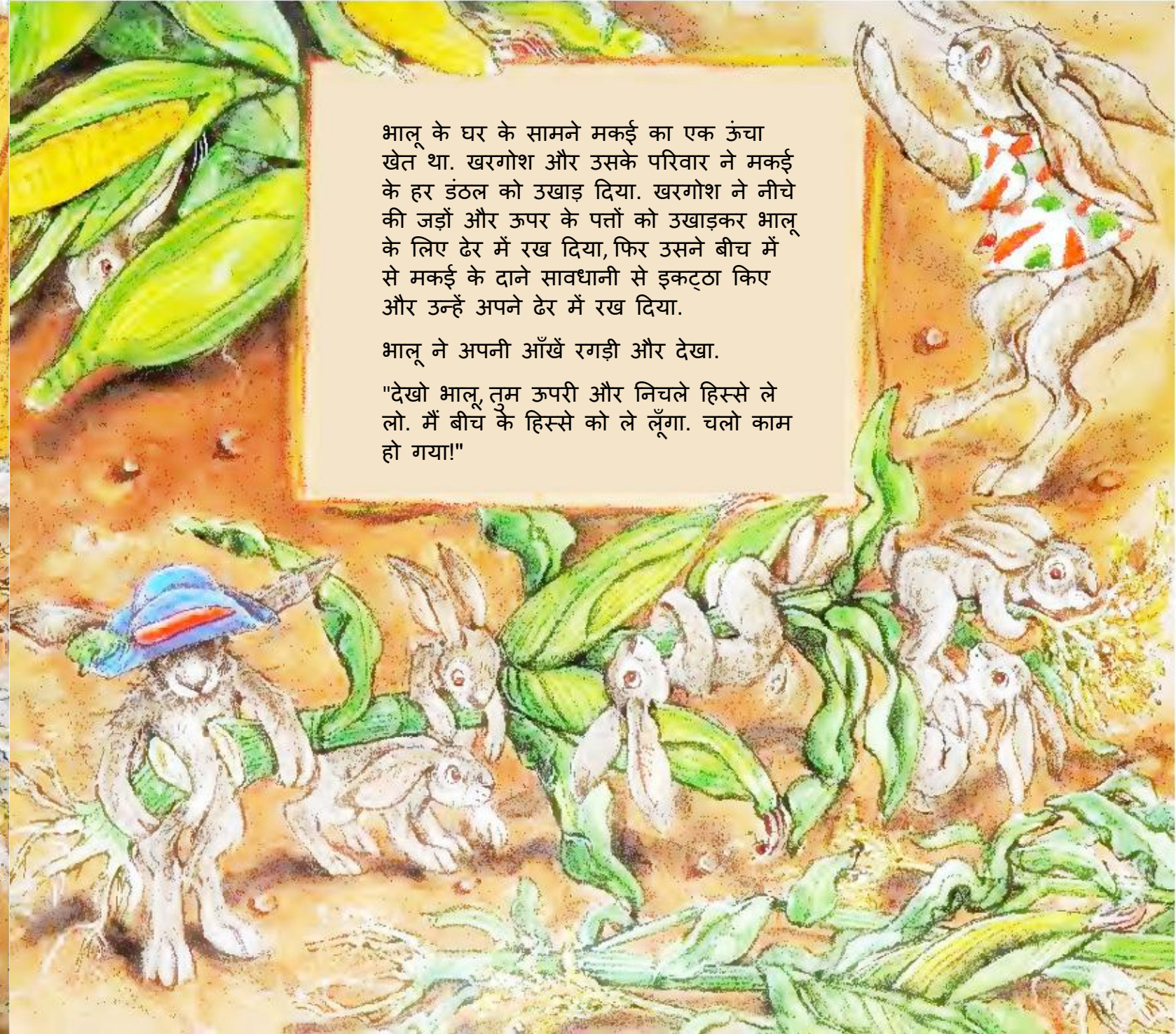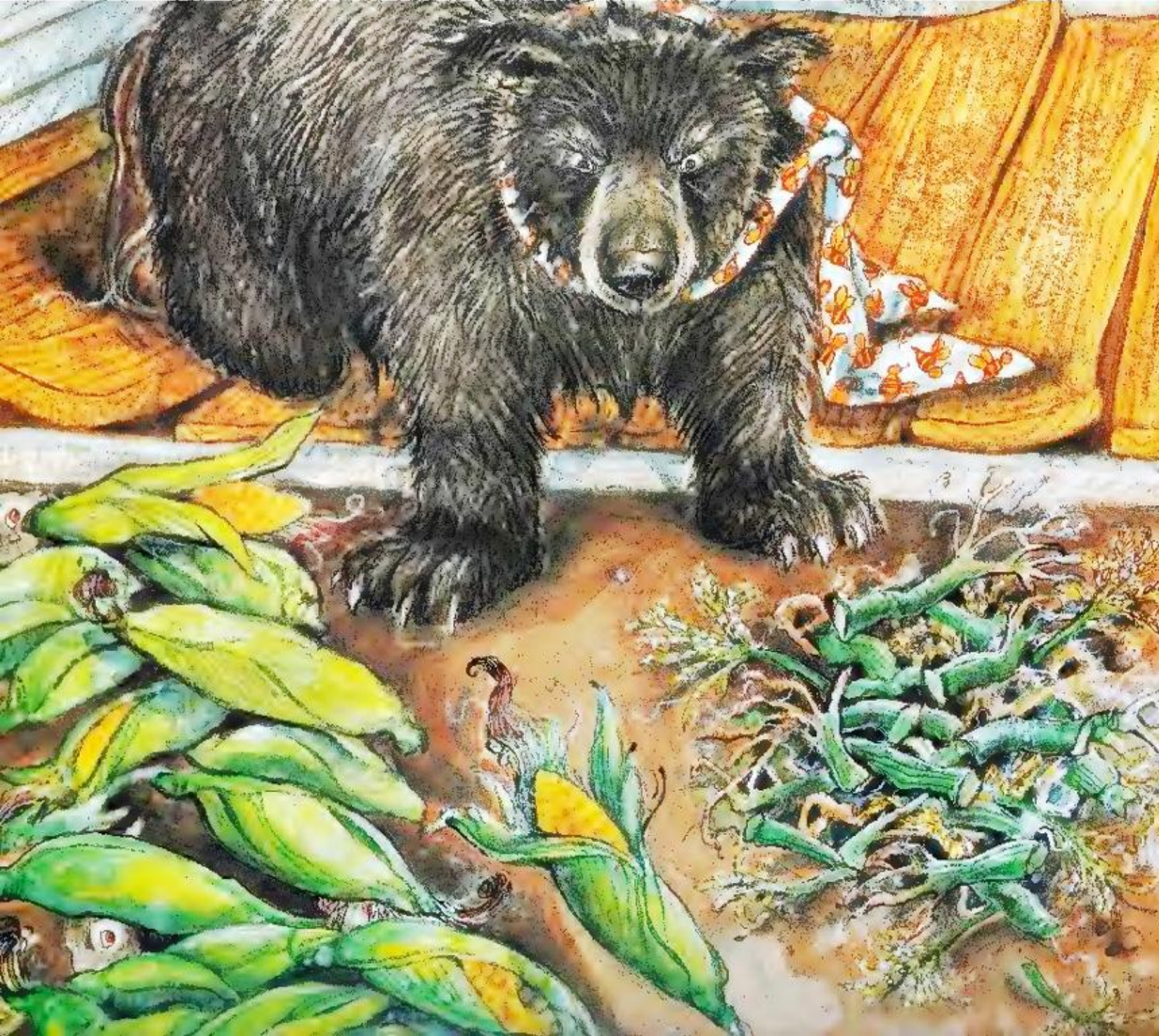
भालू के घर के सामने मकई का एक ऊंचा खेत था. खरगोश और उसके परिवार ने मकई के हर डंठल को उखाड़ दिया. खरगोश ने नीचे की जड़ों और ऊपर के पत्तों को उखाड़कर भालू के लिए ढेर में रख दिया, फिर उसने बीच में से मकई के दाने सावधानी से इकट्ठा किए और उन्हें अपने ढेर में रख दिया.

भालू ने अपनी आँखें रगड़ी और देखा.

"देखो भालू, तुम ऊपरी और निचले हिस्से ले लो. मैं बीच के हिस्से को ले लूँगा. चलो काम हो गया!"
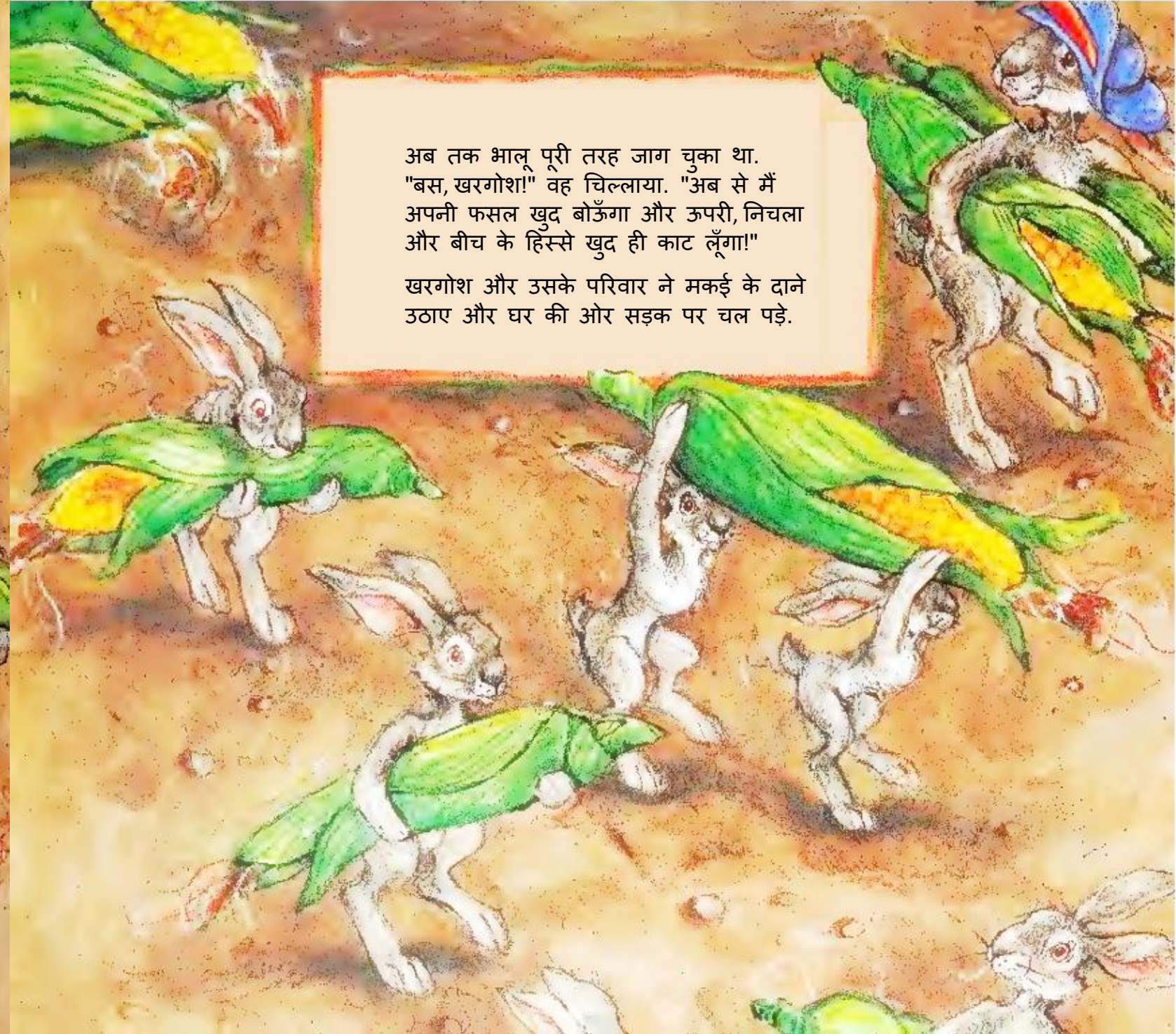
अब तक भालू पूरी तरह जाग चुका था. "बस, खरगोश!" वह चिल्लाया. "अब से मैं अपनी फसल खुद बोऊँगा और ऊपरी, निचला और बीच के हिस्से खुद ही काट लूँगा!"

खरगोश और उसके परिवार ने मकई के दाने उठाए और घर की ओर सड़क पर चल पड़े.

भालू फिर कभी रोपण और कटाई के मौसम में नहीं सोया. खरगोश ने फ़सल से हुए मुनाफ़े से अपनी ज़मीन वापस खरीद ली, और उसने और मिसेज़ खरगोश ने फिर एक सब्ज़ी का ठेला खोला.

और हालाँकि खरगोश और भालू ने पड़ोसी के रूप में खुशी-खुशी रहना सीख लिया, लेकिन उन्होंने फिर कभी साझे का धंधा नहीं किया!